31-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - तुम हो स्प्रीचुअल, रूहानी इनकागनीटो सैलवेशन आर्मी, तुम्हें सारी दुनिया को सैलवेज करना है, डूबे हुए बेडे को पार लगाना है"

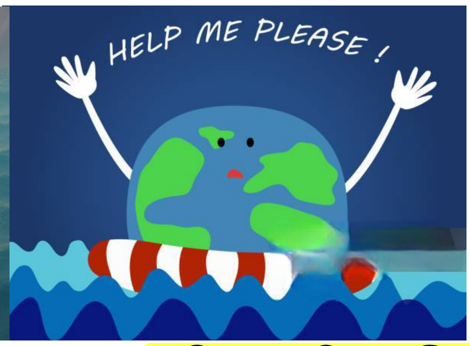

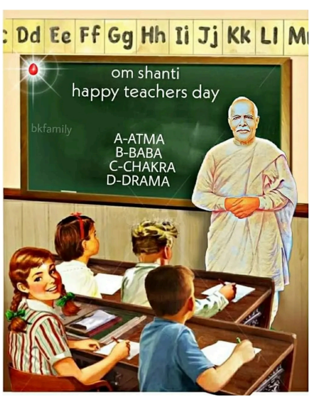

प्रश्नः-संगम पर बाप कौन-सी युनिवर्सिटी खोलते हैं जो सारे कल्प में नहीं होती?

उत्तर:-राजाई प्राप्त करने के लिए पढ़ने की गॉड फादरली युनिवर्सिटी वा कॉलेज संगम पर बाप ही खोलते हैं। ऐसी युनिवर्सिटी सारे कल्प में नहीं होती। इस युनिवर्सिटी में पढ़ाई पढ़कर तुम डबल सिरताज राजाओं का राजा बनते हो।

The king of kings

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों से पहले-पहले बाबा पूछते हैं यहाँ आकर जब बैठते हो तो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते हो? क्योंकि यहाँ तुमको कोई धंधाधोरी, मित्र-सम्बन्धी

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

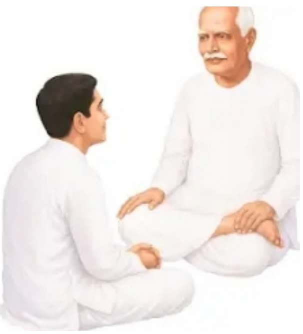

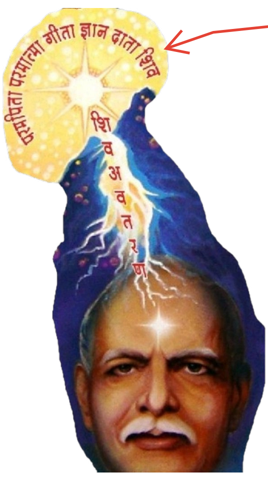

आदि भी नहीं हैं। तुम यह विचार करके आते हो कि हम बेहद के बाप से मिलने जाते हैं। कौन कहते हैं? आत्मा शरीर द्वारा बोलती है। पारलौकिक बाप ने यह शरीर उधार पर लिया है, इनसे समझाते हैं। यह एक ही बार होता है जो बेहद का बाप आकर सिखलाते हैं। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने से तुम्हारा बेडा पार होगा। हर एक का बेडा डूबा हुआ है, जो जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना बेडा पार होगा। गाते हैं ना - हे मांझी बेड़ी (नैया) मेरी पार लगाओ। वास्तव में हर एक को अपने पुरुषार्थ से पार जाना है। जैसे तैरना सिखलाते हैं फिर सीख जाते हैं तो आपेही तैरते हैं। वह सब हैं जिस्मानी बातें। यह हैं रूहानी बातें। तुम जानते हो आत्मा अभी कीचड़ के दुबन (दलदल) में फँस गई है। इस पर हिरण का भी मिसाल देते हैं। पानी समझ जाते हैं, परन्तु वह होती है कीचड़, तो उसमें फँस पड़ते हैं। कभी-कभी स्टीमर्स, मोटरें आदि भी कीचड़ में फँस पड़ती हैं। फिर उनको सैलवेज करते हैं। वह सब हैं सैलवेशन आर्मी। तुम हो रूहानी। तुम जानते हो

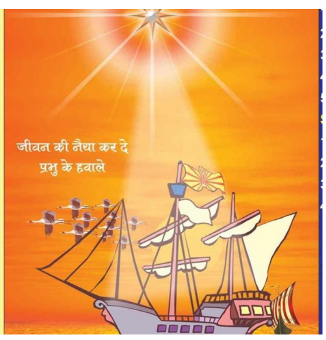

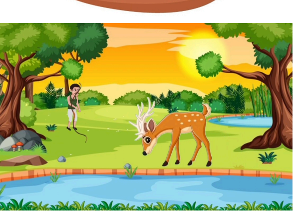

31-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

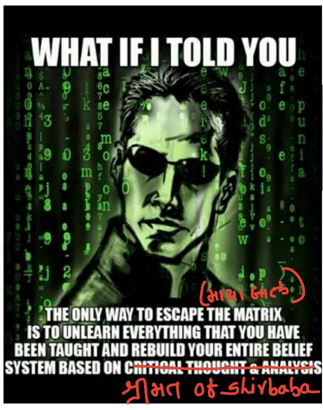

सब माया के दुबन में बहुत फँसे हुए हैं, इनको माया का दुबन कहा जाता है। बाप आकर समझाते हैं - इनसे तुम कैसे निकल सकते हो। वह सैलवेज करते हैं, उसमें मदद चाहिए आदमी को आदमी की। यहाँ तो फिर आत्मा जाकर दुबन में फँसी है। बाप रास्ता बताते हैं इनसे तुम कैसे निकल सकते हो। फिर दूसरों को भी रास्ता बता सकते हो। अपने को और दूसरों को रास्ता बताना है कि तुम्हारी नईया इस विषय सागर से क्षीरसागर में कैसे जाये। सतयुग को कहते हैं क्षीरसागर अर्थात् सुख का सागर। यह है दु:ख का सागर। रावण दु:ख के सागर में डुबोते हैं। बाप आकर सुख के सागर में ले जाते हैं।

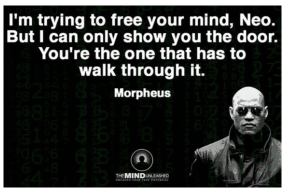

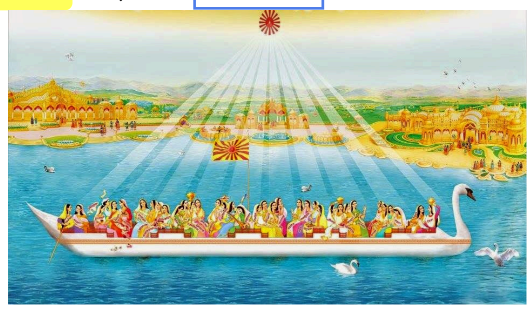

तुमको रूहानी सैलवेशन आर्मी कहा जाता है। तुम श्रीमत पर सबको रास्ता बताते हो। हर एक को समझाते हो - दो बाप हैं, एक हद का, दूसरा बेहद का। लौकिक बाप होते हुए भी सब पारलौकिक

Points:

धारणा सेवा M.imp.

Mind very well...

31-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

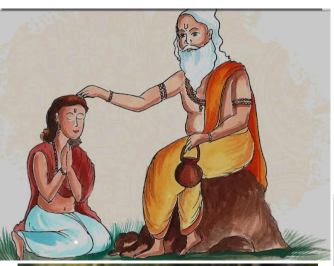

बाप को याद करते हैं परन्तु उनको जानते बिल्कुल नहीं हैं। बाबा कोई ग्लानि नहीं करते हैं परन्तु ड्रामा का राज़ समझाते हैं। यह भी समझाने के लिए ही कहते हैं कि इस समय सभी मनुष्य मात्र 5 विकारों रूपी दलदल में फँसे हुए आसुरी सम्प्रदाय हैं। दैवी सम्प्रदाय को आसुरी सम्प्रदाय जाकर नमन करते हैं क्योंकि वह सम्पूर्ण निर्विकारी हैं। संन्यासियों को नमन करते हैं वह भी घरबार छोड़कर जाते हैं। पवित्र रहते हैं। इन संन्यासियों और देवताओं में रात-दिन का फ़र्क है। देवताओं का तो जन्म भी योगबल से होता है। इन बातों को कोई जानते नहीं। सब कहते हैं ईश्वर की गति मत न्यारी, ईश्वर का अन्त नहीं पा सकते। सिर्फ ईश्वर वा भगवान कहने से इतना लव नहीं आता है। सबसे अच्छा अक्षर है बाप। मनुष्य बेहद के बाप को नहीं जानते तो जैसे आरफन हैं।

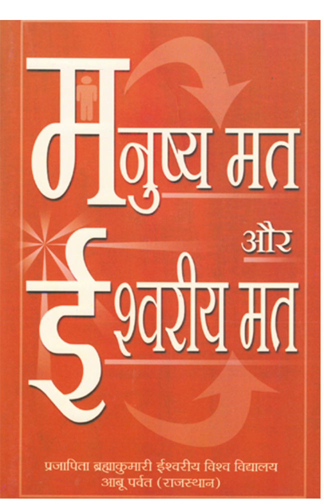

मैगजीन में भी निकाला है, मनुष्य क्या कहते और भगवान क्या कहते हैं। बाप कोई गाली नहीं देते हैं,

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Mind very well...

बच्चों को समझाते हैं क्योंकि बाप तो सबको जानते हैं ना। समझाने लिए कहते हैं - इनमें आसुरी गुण हैं, आपस में लड़ते रहते हैं। यहाँ तो लड़ने की दरकार नहीं है। वह हैं कौरव अर्थात् आसुरी सम्प्रदाय। यह हैं दैवी सम्प्रदाय। बाप समझाते हैं - मनुष्य, मनुष्य को मुक्ति वा जीवनमुक्ति के लिए राजयोग सिखलायें यह हो नहीं सकता। इस समय बाप ही तुम आत्माओं को सिखला रहे हैं। देह-अभिमान, देही-अभिमानी में फर्क देखो कितना है। देह-अभिमान से तुम गिरते आये हो। बाप एक ही बार आकर तुमको देही-अभिमानी बनाते हैं। ऐसे नहीं कि तुम सतयुग में देह से सम्बन्ध नहीं रखेंगे। वहाँ यह ज्ञान नहीं रहता कि मैं आत्मा परमपिता परमात्मा की सन्तान हूँ। यह ज्ञान अभी ही तुमको मिलता है जो प्राय: लोप हो जाता है। तुम ही श्रीमत पर चल प्रालब्ध पाते हो। बाप आते ही हैं राजयोग सिखलाने। ऐसी पढ़ाई और कोई होती नहीं। डबल सिरताज राजायें सतयुग में होते हैं। फिर सिंगल ताज वालों की राजाई भी है, अभी वह राजाई नहीं

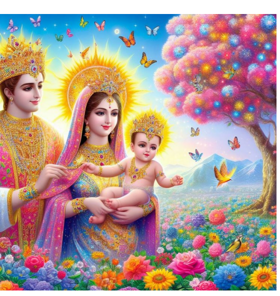

Heaven/सतयुग

रही है, प्रजा का प्रजा पर राज्य है। तुम बच्चे अभी राजाई के लिए पढ़ते हो, इसको गॉड फादरली युनिवर्सिटी कहा जाता है। तुम्हारा नाम भी लिखा हुआ है। वो लोग भल नाम रखते हैं गीता पाठशाला। पढ़ाते कौन हैं? श्रीकृष्ण भगवानुवाच कह देंगे। अब श्रीकृष्ण तो पढ़ा न सकें। श्रीकृष्ण तो खुद पाठशाला में पढ़ने जाते हैं। प्रिन्स-प्रिन्सेज कैसे स्कूल में जाते हैं, वहाँ की भाषा ही दूसरी है। ऐसे भी नहीं कि संस्कृत में गीता गाई है। यहाँ तो अनेक भाषायें हैं। जो जैसा राजा होता है वह अपनी भाषा चलाते हैं। संस्कृत भाषा कोई राजाओं की नहीं है। बाबा कोई संस्कृत नहीं सिखलाते हैं। बाप तो राजयोग सिखलाते हैं, सतयुग के लिए।

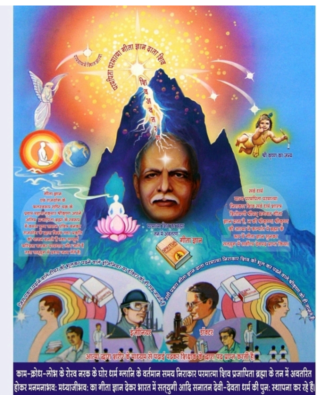

Refer last page
Bhagwad Geeta shloks
on "काम विकार"

बाप कहते हैं काम महाशत्रु है, इन पर जीत पहनो। प्रतिज्ञा कराते हैं, यहाँ जो भी आते हैं उनसे प्रतिज्ञा कराई जाती है। काम पर जीत पाने से तुम

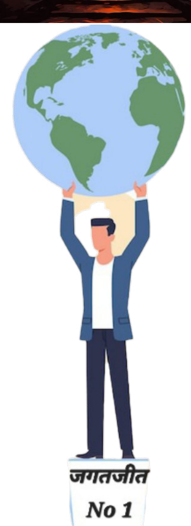

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

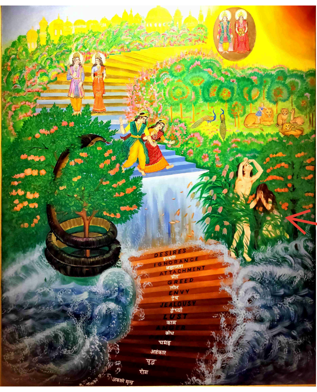

31-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

जगतजीत बनेंगे। यह है मुख्य विकार। यह हिंसा द्वापर से चली आती है, जिससे वाम मार्ग शुरू हुआ। देवतायें कैसे वाम मार्ग में जाते हैं, उनका भी मन्दिर है। वहाँ (e.g. khajuraho m.p.) बहुत छी-छी चित्र बनाये हैं। बाकी वाम मार्ग में कब गये, उसकी तिथि-तारीख तो है नहीं। सिद्ध होता है काम चिता पर बैठने से काले बनते हैं परन्तु नाम-रूप तो बदल जाता है ना। काम चिता पर चढ़ने से आइरन एजड बन पड़ते हैं। अभी तो 5 तत्व भी तमोप्रधान हैं ना, इसलिए शरीर भी ऐसे तमोप्रधान बनते हैं। जन्म से ही कोई कैसे, कोई कैसे हो पड़ते हैं। वहाँ तो एकदम सुन्दर शरीर होते हैं। अभी तमोप्रधान होने के कारण शरीर भी ऐसे हैं। मनुष्य ईश्वर प्रभू आदि भिन्न-भिन्न नामों से याद करते हैं परन्तु उन बिचारों को पता ही नहीं है। आत्मा अपने बाप को याद करती है - हे बाबा, आकर शान्ति दो। यहाँ तो कर्मेन्द्रियों से पार्ट बजा रहे हैं तो शान्ति कैसे मिलेगी। विश्व में शान्ति थी जबकि इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। परन्तु लाखों वर्ष कल्प की आयु कह दी है तो मनुष्य बिचारे कैसे समझेंगे। जब इनका (देवताओं

आज प्रकृति के पांचों तत्व तमोप्रधान होने के कारण भूकम्प, अति वृष्टि, अनावृष्टि (अकाल), आँधी-तूफान आदि समय-प्रति-समय आते रहते हैं तथा मनुष्य को दु:ख देते रहते हैं। निकट भविष्य में ऐसा समय आने वाला है जब यह तत्व सतोप्रधान होकर सुखदायी बन जायेंगे।

How lucky and Great we are...!

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

का) राज्य था तो एक राज्य एक धर्म था और कोई खण्ड में ऐसे नहीं कहते कि एक धर्म एक राज्य हो। यहाँ आत्मा मांगती है एक राज्य हो। तुम्हारी आत्मा जानती है अब हम एक राज्य स्थापन कर रहे हैं। वहाँ सारे विश्व के मालिक हम रहेंगे। बाप हमको सब कुछ दे देते हैं। कोई भी हमसे राजाई छीन नहीं सकते। हम सारे विश्व के मालिक बन जाते हैं। विश्व में कोई सूक्ष्मवतन, मूलवतन नहीं आता है। यह सृष्टि का चक्र यहाँ ही फिरता रहता है। इसको बाप, जो रचयिता है वही जानते हैं। ऐसे नहीं कि रचना रचते हैं। बाप आते ही हैं संगम पर, पुरानी दुनिया से नई दुनिया बनाने। दूरदेश से बाबा आया हुआ है, तुम जानते हो नई दुनिया हमारे लिए बन रही है। बाबा हम आत्माओं का श्रृंगार कर रहे हैं। उनके साथ फिर शरीरों का भी श्रृंगार हो जायेगा। आत्मा पवित्र होने से फिर शरीर भी सतोप्रधान मिलेंगे। सतोप्रधान तत्वों से शरीर बनेंगे। इन्हों का सतोप्रधान शरीर है ना इसलिए नेचुरल ब्युटी रहती है। गाया भी जाता है रिलीजन इज़ माइट। अब माइट मिली कहाँ से? एक ही देवी

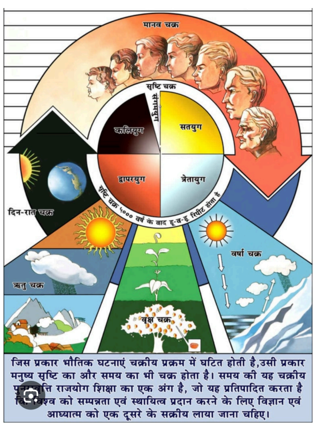

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

31-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

-देवताओं का रिलीजन है जिससे माइट मिलती है। यह देवतायें ही सारे विश्व के मालिक बनते हैं और कोई विश्व के मालिक नहीं बनते हैं। तुमको कितनी माइट मिलती है। लिखा हुआ भी है आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा करते हैं। यह बातें दुनिया में कोई जानते थोड़ेही हैं। बाप कहते हैं मैं ब्राह्मण कुल स्थापन करता हूँ फिर उन्हों को सूर्यवंशी डिनायस्टी में ले आता हूँ। जो अच्छी रीति पढ़ते हैं वह पास हो सूर्यवंशी में आते हैं। है सारी ज्ञान की बात। उन्होंने फिर स्थूल बाण हथियार आदि दिखाये हैं। बाण चलाना भी सीखते हैं। छोटे बच्चों को भी बन्दूक चलाना सिखाते हैं। तुम्हारा फिर है योग बाण। बाप कहते हैं मामेकम् याद करोगे तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। हिंसा की कोई बात नहीं है। तुम्हारी पढ़ाई भी है गुप्त। तुम हो स्प्रीचुअल, रूहानी सैलवेशन आर्मी। यह कोई को मालूम नहीं है कि रूहानी आर्मी कैसे होती है। तुम हो इनकागनीटो, स्प्रीचुअल रूहानी सैलवेशन आर्मी। सारी दुनिया को तुम सैलवेज करते हो। सबका बेडा डूबा हुआ

But we know, How Lucky & Great we are..!

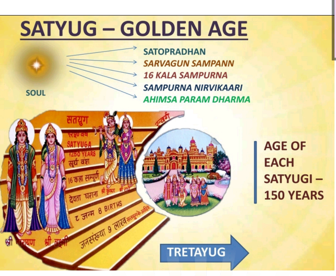

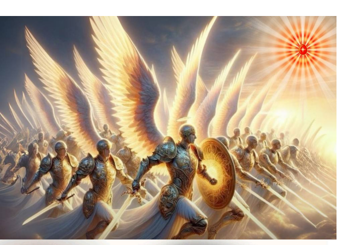

यादगार

चढ़ाओ नशा...

Points: ... रणा सेवा

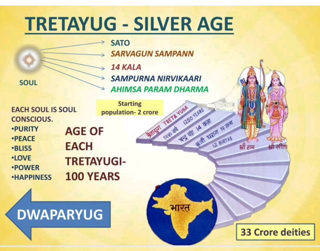

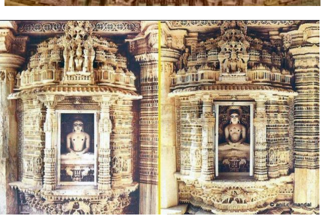

है। बाकी सोने की लंका कोई है नहीं। ऐसे नहीं कि सोनी द्वारिका नीचे चली गई है, वह निकल आयेगी। नहीं, द्वारिका में भी इनका राज्य था परन्तु सतयुग में था। सतयुगी राजाओं की ड्रेस ही अलग होती है, त्रेता की अलग। भिन्न-भिन्न ड्रेस, भिन्न-भिन्न रसम रिवाज होती है। हर एक राजा की रसम-रिवाज अपनी-अपनी, सतयुग का तो नाम लेते ही दिल खुश हो जाती है। कहते ही हैं स्वर्ग, पैराडाइज़ परन्तु मनुष्य कुछ भी जानते नहीं। मुख्य तो है यह देलवाड़ा मन्दिर। हूबहू तुम्हारा यादगार है। मॉडल्स तो हमेशा छोटा बनाते हैं ना। यह बिल्कुल एक्यूरेट मॉडल्स हैं। शिवबाबा भी है, आदि देव भी है, ऊपर में वैकुण्ठ दिखाया है। शिवबाबा होगा तो जरूर रथ भी होगा। आदि देव बैठा है, यह भी किसको पता नहीं है। यह शिवबाबा का रथ है। महावीर ही राजाई प्राप्त करते हैं। आत्मा में ताकत कैसे आती है, यह भी तुम अभी समझते हो। घड़ी-घड़ी अपने को आत्मा समझो। हम आत्मा सतोप्रधान थी तो पवित्र थी। शान्तिधाम, सुखधाम में जरूर पवित्र ही रहेंगे।

swamaan

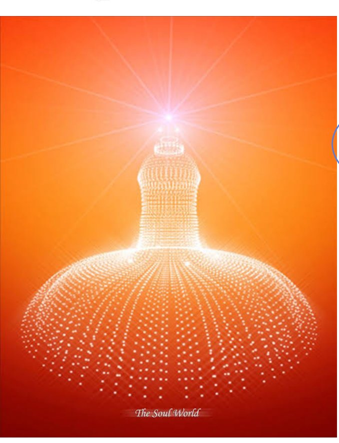

अब बुद्धि में आता है, कितनी सहज बात है। भारत सतयुग में पवित्र था। वहाँ अपवित्र आत्मा रह न सके। इतनी सब पतित आत्मायें ऊपर कैसे जायेंगी। जरूर पवित्र बनकर ही जायेंगी। आग लगती है फिर सभी आत्मायें चली जायेंगी। बाकी शरीर रह जाते हैं। यह सब निशानियाँ भी हैं। होलिका का अर्थ कोई समझते थोड़ेही हैं। सारी दुनिया इसमें स्वाहा होनी है। यह ज्ञान यज्ञ है। ज्ञान अक्षर निकाल बाकी रूद्र यज्ञ कह देते हैं। वास्तव में यह है रूद्र ज्ञान यज्ञ। यह ब्राह्मणों द्वारा ही रचा जाता है। सच्चे-सच्चे ब्राह्मण तुम हो। प्रजापिता ब्रह्मा की तो सब औलाद हैं ना। ब्रह्मा द्वारा ही मनुष्य सृष्टि रची जाती है। ब्रह्मा को ही ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर कहा जाता है, इनका सिजरा होता है ना। जैसे अलग-अलग बिरादरी का सिजरा रखते हैं। तुम्हारी बुद्धि में है कि मूलवतन में है आत्माओं का सिजरा, कायदेमुज़ीब। शिवबाबा फिर ब्रह्मा-विष्णु-शंकर, फिर लक्ष्मी-नारायण आदि ये सब हैं मनुष्यों के सिज़रे। अच्छा!

31-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

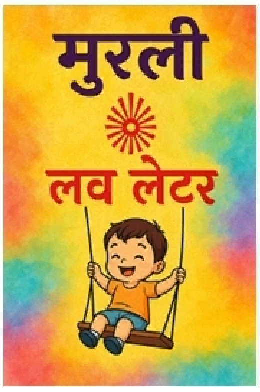

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) रूहानी सैलवेशन आर्मी बन स्वयं को और सर्व को सही रास्ता बताना है। सारी दुनिया को विषय सागर से सैलवेज़ करने के लिए बाप का पूरा-पूरा मददगार बनना है।

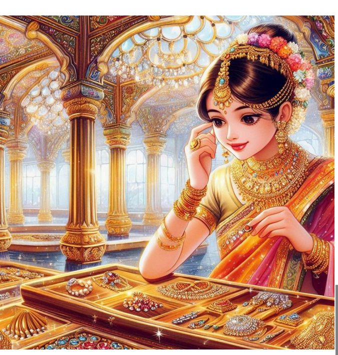

2) ज्ञान-योग से पवित्र बन आत्मा का श्रृंगार करना है, शरीरों का नहीं। आत्मा के पवित्र बनने से शरीर का श्रृंगार स्वत: हो जायेगा।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

31-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:-

किनारा करने के बजाए हर पल बाप का सहारा अनुभव करने वाले निश्चय बुद्धि विजयी भव

Characteristics of

विजयी भव की वरदानी आत्मा हर पल स्वयं को सहारे के नीचे अनुभव करती है।

उनके मन में संकल्पमात्र भी बेसहारे वा अकेलेपन का अनुभव नहीं होता।

कभी उदासी या अल्पकाल के हद का वैराग्य नहीं आता।

वे कभी किसी कार्य से, समस्या से, व्यक्ति से किनारा नहीं करते लेकिन हर कर्म करते हुए, सामना करते हुए, सहयोगी बनते हुए बेहद की वैराग्य वृत्ति में रहते हैं।

स्लोगन:- एक बाप की कम्पन्नी में रहो और बाप को ही अपना कम्पैनियन बनाओ।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

31-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अव्यक्त इशारे -

स्वयं और सर्व के प्रति

मन्सा द्वारा योग की शक्तियों का प्रयोग करो

दिव्य-बुद्धि रूपी विमान द्वारा सबसे ऊंची चोटी की स्थिति में स्थित हो,

अव्यक्त वतनवासी बन विश्व की सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना के सहयोग की लहर फैलाओ।

योग के प्रयोग द्वारा दु:खी-अशान्त आत्माओं को शान्ति और शक्ति की सकाश दो।

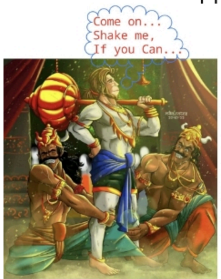

सभी अंगद के समान अचल अडोल रहने वाले हो ना। रावण राज्य की कोई भी परिस्थिति व व्यक्ति ज़रा भी संकल्प रूप में भी हिला न सके, नाखुन को भी न हिला सके। संकल्प में हिलना अर्थात् नाखुन हिलना। तो संकल्प रूप में भी न व्यक्ति, न परिस्थिति हिला सके, कभी कोई सम्बन्धी या दैवी परिवार का भी ऐसा निमित्त बन जाता है जो विघ्न रूप बन जाता है। लेकिन अंगद के समान सदा अचल रहने वाला व्यक्ति हो, विघ्न को और परिस्थितियों को पार कर लेगा क्योंकि नॉलेजफुल है। वह जानता है कि यह विघ्न क्यों आया। ये विघ्न गिराने के लिए नहीं है लेकिन और ही मज़बूत बनाने के लिए हैं। वह कन्फ्यूज नहीं होगा।

जैसे इम्तिहान के हाल में जब पेपर आता है तो कमज़ोर स्टूडेन्ट कनफ्यूज हो जाते हैं, अच्छे स्टूडेन्ट देखकर खुश होते हैं क्योंकि बुद्धि में रहता है कि यह पेपर देकर वह क्लास आगे बढ़ेगा। उन्हें मुश्किल नहीं लगता। कमज़ोर क्वेश्चन ही गिनती करते रहेंगे। ऐसा क्वेश्चन क्यों आया, ये किसने निकाला, क्यों निकाला तो यहाँ भी कोई निमित्त पेपर बनकर आता है तो यह क्वेश्चन नहीं उठना चाहिए कि यह क्यों करता है, ऐसा नहीं करना चाहिए। जो कुछ हुआ अच्छा हुआ, अच्छी बात उठा लो। जैसे हँस मोती चुगता है ना, कंकड़ को अलग कर देता है। दूध और पानी को अलग कर देता है। दूध ले लेता है, पानी छोड़ देता है। ऐसे कोई भी बात सामने आये तो पानी समझकर छोड़ दो। किसने मिक्स किया, क्यों किया - यह नहीं, इसमें भी टाइम वेस्ट हो जाता है। अगर क्यों, क्या करते इम्तिहान की अन्तिम घड़ी हो गई तो फेल हो जायेंगे। वेस्ट किया माना फेल हुआ। क्यों-क्या में श्वास निकल जाए तो फेल। कोई भी बात फील करना माना फेल होना। माया शेर के रूप में भी आये तो आप योग की अग्नि जलाकर रखो, अग्नि के सामने कोई भी भयानक शेर जैसी चीज़ भी वार नहीं कर सकती। सदा योगाग्नि जगती रहे तो माया किसी भी रूप में आ नहीं सकती। सब विघ्न समाप्त हो जायेंगे।

Attention Please..!

31/10/25

(23.01.1980)

8.1.2 अपने को लक्ष्य दो, खुली हवा में बैठो :

अमृतवेले याद का इतना अनुभव नहीं होता है। इसलिए जैसे साकार में यहाँ बाहर खुली हवा में सैर भी कराते थे, लक्ष्य भी देते थे, योग का अनुभव भी कराते थे। जैसे शुरू में तुम अलग-अलग जाकर बैठते थे सागर के किनारे — कोई कहाँ, कोई कहाँ जाकर बैठते थे। ऐसी प्रैक्टिस कराओ। 31/10/25

अर्जुन उवाच

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः॥

अर्जुन बोले—हे कृष्ण! तो फिर यह मनुष्य स्वयं न चाहता हुआ भी बलात् लगाये हुएकी भाँति किससे प्रेरित होकर पापका आचरण करता है?॥ ३६॥

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्॥

श्रीभगवान् बोले—रजोगुणसे उत्पन्न हुआ यह काम ही क्रोध है, यह बहुत खानेवाला अर्थात् भोगोंसे कभी न अघानेवाला और बड़ा पापी है, इसको ही तू इस विषयमें वैरी जान॥ ३७॥

धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्॥

जिस प्रकार धूएँसे अग्नि और मैलसे दर्पण ढका जाता है तथा जिस प्रकार जेरसे गर्भ ढका रहता है, वैसे ही उस कामके द्वारा यह ज्ञान ढका रहता है॥ ३८॥

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च॥

और हे अर्जुन! इस अग्निके समान कभी न पूर्ण होनेवाले कामरूप ज्ञानियोंके नित्य वैरीके द्वारा मनुष्यका ज्ञान ढका हुआ है॥ ३९॥

Enemy Forever

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम्॥

इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि—ये सब इसके वासस्थान कहे जाते हैं। यह काम इन मन, बुद्धि और इन्द्रियोंके द्वारा ही ज्ञानको आच्छादित करके जीवात्माको मोहित करता है॥ ४०॥

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम्॥

इसलिये हे अर्जुन! तू पहले इन्द्रियोंको वशमें करके इस ज्ञान और विज्ञानका नाश करनेवाले महान् पापी कामको अवश्य ही बलपूर्वक मार डाल॥ ४१॥

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः॥

इन्द्रियोंको स्थूल शरीरसे पर यानी श्रेष्ठ, बलवान् और सूक्ष्म कहते हैं; इन इन्द्रियोंसे पर मन है, मनसे भी पर बुद्धि है और जो बुद्धिसे भी अत्यन्त पर है वह आत्मा है॥ ४२॥

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्॥

इस प्रकार बुद्धिसे पर अर्थात् सूक्ष्म, बलवान् और अत्यन्त श्रेष्ठ आत्माको जानकर और बुद्धिके द्वारा मनको वशमें करके हे महाबाहो! तू इस कामरूप दुर्जय शत्रुको मार डाल॥ ४३॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

Formidable Enemy

Biggest enemy of soul/human Being is not any person/religion, but the 'Kaam vikar' is.

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥

विषयोंका चिन्तन करनेवाले पुरुषकी उन विषयोंमें आसक्ति हो जाती है, आसक्तिसे उन विषयोंकी कामना उत्पन्न होती है और कामनामें विघ्न पड़नेसे क्रोध उत्पन्न होता है॥ ६२॥

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

क्रोधसे अत्यन्त मूढ़भाव उत्पन्न हो जाता है, मूढ़भावसे स्मृतिमें भ्रम हो जाता है, स्मृतिमें भ्रम हो जानेसे बुद्धि अर्थात् ज्ञानशक्तिका नाश हो जाता है और बुद्धिका नाश हो जानेसे यह पुरुष अपनी स्थितिसे गिर जाता है॥ ६३॥

Soul

विषयो के चिंतन से आसक्ति
आसक्ति से कामना/काम
कामना में विघ्न पड़ने से क्रोध
क्रोध से *अत्यंत* मूढ़भाव
मूढ़भाव से स्मृतिमें भ्रम
स्मृति में भ्रम से बुद्धि अर्थात ज्ञानशक्ति का नाश
बुद्धि का नाश हो जाने से पुरुष(आत्मा) अपनी स्थिति से गिर जाता है।

गीता अध्याय 2 - श्लोक 62,63

So, ultimate Root cause as per revered "Geeta" is

Kaam vikar